डा·टी·आर·पाटील
हिन्दी विभाग,
पुणे विद्यापीठ, गणेशखिंड
पुणे - 411 007·

डी-4, शिक्षक निवास,
पुणे विद्यापीठ,
गणेशखिंड, पुणे
411 007 (महाराष्ट्र)

प्र मा ण प त्र

मैं डा·टी·आर·पाटील, हिन्दी विभाग, पुणे विश्वविद्यालय, पुणे यह प्रमाणित करता हूँ कि श्री मनोहर हरिभाऊ दरेकर ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्·फिल्·(हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध "हमीदुल्ला के असंगत नाटक : एक अनुशीलन" मेरे निर्देशन में बडे परिश्रम के साथ सफलतापूर्वक पूरा किया है। जो तथ्य प्रबंध में प्रस्तुत किये गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। श्री·दरेकर के शोध-कार्य के बारे में मैं पूरी तरह से संतुष्ट हूँ।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध कला, विद्या शाखा (Faculty of Arts) विषय से संबंधित नाटक साहित्यिक विधा में समाविष्ट है।

पुणे
दिनांक : 25 जून 1996

(डा·टी·आर·पाटील)
शोध-निर्देशक के हस्ताक्षर

अ नु शं सा

हम अनुशंसा करते हैं कि श्री·मनोहर हरिभाऊ दरेकर का एम्·फिल्·(हिंदी) लघु-शोध-प्रबंध "हमीदुल्ला के असंगत नाटक : एक अनुशीलन" परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

पुरुषोत्तम शेठ
प्राचार्य,
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा·

L. B. S. COLLEGE SATARA

डॉ·गजानन सुर्वे,
रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा

सातारा
दिनांक : 24 जून 1996

हमीदुल्ला के असंगत नाटक : एक अनुशीलन

प्र स्था प न

यह शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्·फिल्·(हिन्दी) के प्रबंध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

सातारा

दिनांक : 24 जून 1996

(श्री·मनोहर हरिभाऊ दरेकर)
शोध-छात्र के हस्ताक्षर

प्रा क्क थ न

हमीदुल्ला वर्तमान युग के प्रतिभासंपन्न बहुमुखी नाटककार हैं। नाट्यकला के साथ-साथ बाल साहित्यकार, कहानीकार, एकांकिकार, रेडियो नाटककार के रूप में ख्याति एवं सम्मान प्राप्त कर चुके हैं। फिर भी विंसगत नाटक एक नवीन और मौलिक विधा है, जिसे भुवनेश्वर प्रसाद ने सबसे पहले प्रवर्तित किया। उनके बाद कुछ यह साहित्य की विधा अंधकार में हो रही थी। जिसे डॉ·विपिनकुमार अग्रवाल ने सँवारा और इस विधा को विकसित किया। इनके साथ-साथ इस विधा को विकसित करने वाले नाटककारों में हमीदुल्ला का नाम भी जुड़ जाता है। उन्होंने असंगत नाटकों की सर्जना कर वर्तमान मनुष्य जीवन के वास्तविक यथार्थ को अंकित किया है।

मनुष्य जीवन की विभिन्न विसंगतियों को विसंगत नाट्यशैली में वास्तविक यथार्थ को सत्य में रूपायित किया है। फिर भी यह विधा साहित्यकारों, आलोचकों, इतिहासकारों तथा शोधार्थीयों की दृष्टि से दूर रही है। फलतः इस विधा के बारे में स्वतंत्र रूप से कुछ भी साहित्य प्राप्त नहीं होता। सिर्फ डॉ·नरनारायण द्वारा संपादित "अंसगत नाटक और रंगमंच, और डॉ·रामसेवक सिंह का "एब्सर्ड नाट्य परम्परा" (हिन्दी और अंग्रेजी ग्रंथ) इन ग्रंथों में ही असंगत साहित्य प्राप्त होता है। इसीकारण अप्राप्य और साहित्यकारों, आलोचकों, इतिहासकारों, और समीक्षकों द्वारा उपेक्षित इस नाट्यधारा का अनुसंधान करना ही मेरा मुख्य उद्देश्य है।

प्रस्तुत शोध-कार्य सात अध्यायों में विभाजित है -

अध्याय : 1

प्रस्तुत अध्याय का शीर्षक **"असंगत नाटक : सैद्धान्तिक विवेचन"** है, जिसके अंतर्गत स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाट्यासाहित्य में असंगत नाटकों का स्थान, असंगत शब्द-प्रयोग, असंगति की जीवन में प्रचुरता, मनोवैज्ञानिक पीठिका, असंगत

नाटक से अभिप्राय, परम्परागत नाटक और असंगत नाटक में अंतर, पाश्चात्य ऐब्सर्ड नाट्य परम्परा, हिंदी के असंगत नाटक पाश्चात्य प्रभाव, असंगत नाटक भारतीय परिप्रेक्ष्य में, आदि पर समुचित प्रकाश डाला गया है। इसके साथ-साथ इस नाटक के सैद्धान्तिक विवेचन में विसंगत नाटकों का कथ्य, चरित्र-चित्रण, संवाद और भाषाशैली, प्रतीक और बिंब योजना, रंगमंचीय आयाम एंव उद्देश्य आदि का विवेचन किया गया है।

अध्याय : 2

प्रस्तुत अध्याय "हिंदी के असंगत नाटक और हमीदुल्ला के असंगत नाटकों की अवधारणा" संज्ञा से अभिहित है। इसमें प्रमुख असंगत नाट्य-परम्परा में योगदान देने वाले नाटककारों के असंगत नाटकों का संक्षिप्त अंकन किया है। इसके साथ-साथ हमीदुल्ला के व्यक्तित्व और कृतित्व को भी रेखांकित किया गया है। साथ ही और उनके आलोच्य असंगत नाटकों के कथ्य पर भी प्रकाश डाला है। इसमें शोध-कार्य की दिशाओं को भी संबोधित किया है।

अध्याय : 3

प्रस्तुत अध्याय का नाम "हमीदुल्ला के असंगत नाटकों में जीवन की विभिन्न असंगतियाँ" है। इसमें यांत्रिकता और परवशता, भ्रष्टाचार, स्वार्थान्धता, रिश्तों का खोखलापन, अस्तित्व की विवशता, संस्कारहीनता, आदमी की बेचारगी, पाशविकता, अवसरवादिता, विवाहित स्त्री-पुरूषों का बेगानापन, नपुंसकता, अर्थहीन भटकाव, नारी शोषण, कार्यालयों की निष्क्रियता, स्त्री-पुरूष संबंधों में बदलाव, मोहभंग और मूल्यहीनता आदि वर्तमान की विसंगतियों को विवेचित विश्लेषित करने का प्रयास किया है।

अध्याय : 4

प्रस्तुत अध्याय का शीर्षक "हमीदुल्ला के असंगत नाटकों में मनो-वैज्ञानिकता" है। इसमें मनोविज्ञान का स्वरूप और महत्व प्रस्तुत करते हुए असंगत नाटक और मनोविज्ञान और हमीदुल्ला के असंगत नाटक और मनोविज्ञान के अनेक

पहलुओं का चित्रण किया गया है। यहाँ पर हमीदुल्ला के असंगत नाटकों में पाये जाने वाले विभिन्न मनोविकारों, मनोविकृतियाँ, रक्षायुक्तियाँ, या मनोरचनाएँ आदि पर सोदाहरण विवेचन-विश्लेषणकर स्वप्न, फैंशन, भीड़ आदि मनोविज्ञान के अन्य आयामों पर प्रकाश डाला गया है।

अध्याय : 5

प्रस्तुत अध्याय का नामकरण "हमीदुल्ला के असंगत नाटकों में शिल्प-विधान" है। जिसमें हमीदुल्ला के असंगत नाटकों का वस्तुविन्यास, पात्र और चरित्र - चित्रण, संवाद शिल्प, भाषाशैली, गीत एवं संगीत योजना, बिम्ब और प्रतीक योजना, तथा शीर्षकों के अभिनव प्रयोग आदि पर विचार व्यक्त करते हुए हमीदुल्ला के शिल्प-विधान की विशिष्टता को अंकित किया है।

अध्याय : 6

प्रस्तुत अध्याय को "हमीदुल्ला के असंगत नाटकों में रंगमंचीय बोध" नाम से अभिहित किया है। जिसमें नाटक और रंगमंच का संबंध, रंगमंच की कल्पना, रंगमंच के उपकरण, मंच-सज्जा, वेशभूषा, रूप-विन्यास, पात्रों का क्रिया-व्यापार, ध्वनि-प्रकाश योजना, तथा दर्शकीय और पाठकों की संवेदनाएँ आदि के परिप्रेक्ष्य में हमीदुल्ला के असंगत नाटकों का विवेचन-विश्लेषण करने का प्रयास है।

अध्याय : 7

प्रस्तुत अध्याय "समापन" नाम से अभिहित है। इस अध्याय में शोध-प्रबंध का समन्वित मूल्यांकन है।

प्रबंध की मौलिकता

1. हिन्दी नाट्य साहित्य में विसंगत नाटक नवीन प्रवृत्ति है, जो साहित्यकारों समीक्षकों, शोधार्थियों से प्रायः उपेक्षित रह गयी हैं। इस शोध-प्रबंध में विसंगत नाट्य विधा के सिद्धान्त पक्ष को मुख्य रूप से स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

2· हिंदी के विसंगत नाटक और उनके अंसगत नाटकों पर प्रकाश डालकर शोध-कार्य के लिए नयी दिशा प्रदान की है।

3· इसमें हमीदुल्ला के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकार डाला ~~दिया~~ गया है।

4· मनोविज्ञान, कथ्य, शिल्प, शैली तथा मंचीयता की दृष्टि से हमीदुल्ला के नाटक महत्व रखते हैं। इसी कारण उनके नाटकों पर शोध-कार्य करने में विशेष स्थान दिया है।

कृतज्ञता ज्ञापन

प्रस्तुत शोध-प्रबंध वंदनीय गुरूवर डा·टी·आर·पाटील, हिंदी विभाग, पुणे विश्वविद्यालय, पुणे (महाराष्ट्र) के निर्देशन में लिखा है। अपने कामों में व्यस्त होने पर भी उन्होंने शोध-प्रबंध के विषय चयन से लेकर उसकी पूर्णता तक मौलिक मार्गदर्शन किया है। उनके प्रति शब्दों में कृतज्ञता व्यक्त करना मेरे लिए कठिन है। इस शोध-प्रबंध का सारा श्रेय उन्हीं के मार्गदर्शन का फल है। उन्होंने मुझे समय-समय पर संदर्भ-ग्रंथ, नाटक, कोश ग्रंथादि अध्ययन के लिए देकर मुझे उपकृत किया है। अतः श्रद्धेय पाटीलजी के चरणों पर नतमस्तक होने में ही मैं गर्व का अनुभव करता हूँ।

प्रस्तुत शोध-कार्य में मेरी मदद करने में गुरूपत्नी सौ·सुजाता भाभी, प्रा·डॉ·गजानन सुर्वे, रीडर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा (महाराष्ट्र) आदि ने मुझे यथावसर शोध-कार्य पूरा करने के लिए प्रेरणा देकर उपकृत किया है। लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय के प्राचार्य, पुरूषोत्तम शेठ ने भी प्रस्तुत शोध-कार्य में मुझे मार्गदर्शन देकर उपकृत किया है, तथा "ऑफिस सुपरिटेंडेट" श्री·आर·व्ही·बर्गे ने मुझे यथावसर मार्गदर्शन देकर उपकृत किया है। अतः उनका भी मैं आभारी हूँ।

इनके अतिरिक्त प्रिय मित्रवर प्रा·क्षीरसागर, पद्मभूषण डॉ·वसंत दादा पाटील महाविद्यालय तासगाव, ने ग्रंथालय से समय-समय पर संदर्भ ग्रंथ अध्ययन

कार्यालय अधीक्षक

के लिए देकर मुझे उपकृत किया है। ~~इनके अतिरिक्त~~ प्रा·आर·बी·मानकर, मेरे प्रिय मित्र श्री·विजय मानकर, श्री·जगन्नाथ कुंभार, श्री·उल्हास मिरजकर आदि ने भी मुझे शोध-कार्य पूरा करने में प्रेरणा देकर उपकृत किया है। ~~इनके अतिरिक्त~~ मेरे गुरू प्रा·जे·आर·जाधव ने शोध-कार्य पूरा करने के लिए मौलिक सहकार्य दिया है। अतः उनके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ। शोध-प्रबंध का विषय बने श्रद्धेय हमीदुल्लाजी ने भी पत्राचार द्वारा मेरी भरपूर सहायता की है। उनके प्रति मैं हमेशा ऋणी हूँ। मेरे अध्ययन के लिए वक्त के अनुसार संदर्भ ग्रंथ देने वाले हमारे महाविद्यालय के ग्रंथपाल एस·ई·जगताप तथा श्री·जाधव और अन्य कर्मचारी आदि के प्रति भी आभारी हूँ।

शोध-कार्य में मदद करने वाले उपरोक्त महानुभवों के अतिरिक्त गरीब परिस्थिति में मुझे पढ़ाने की जिद रखने वाले मेरे श्रद्धेय पिताजी श्री·हरिभाऊ रामचंद्र दरेकर और माता सौ·सुशीला हरिभाऊ दरेकर के आशीर्वाद प्रस्तुत शोध-कार्य के लिए विशेष उपयुक्त साबित हुए हैं। इनके साथ-साथ मेरे बड़े भाई श्री·सुरेश हरिभाऊ दरेकर तथा श्री·बाळासाहेब हरिभाऊ दरेकर ने भी इस शोध-कार्य में वक्त देकर मेरी मदद की है। अतः वे भी प्रस्तुत शोध-कार्य में बराबर के हिस्सेदार हैं।

आत्मीयता और तत्परता से कम वक्त में प्रबंध टंकन-लेखन करने वाले **"रिलॅक्स सायक्लोस्टायलिंग, सातारा"** के श्री·मुकुन्द ढवले और उनके सहयोगी श्री·सुशीलकुमार कांबले, राजू कुलकर्णी के प्रति मैं हमेशा कृतज्ञ रहूँगा।

MDarekar
(मनोहर हरिभाऊ दरेकर)

गुरूवार पेठ, तासगाव,
ता·तासगाव, जि·सांगली
महाराष्ट्र

दिनांक : 24 जून 1996